



Research Article

मतदान व्यवहार के ग्रामीण-शहरी प्रतिमानों का तुलनात्मक अध्ययन: बेलतरा विधानसभा क्षेत्र में पहचान और प्रदर्शन आधारित राजनीति के विशेष संदर्भ में (2015-2025)

प्रभात मिश्र ^{1*}, डॉ. सुधा शुक्ला ²

¹ शोधार्थी, सामाजिक विज्ञान (राजनीति विज्ञान) विभाग, डॉ. सी.व्ही. रमन विश्वविद्यालय, करगी रोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

² सहायक प्राध्यापक, सामाजिक विज्ञान (राजनीति विज्ञान) विभाग, डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, कारगी रोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Corresponding Author: * प्रभात मिश्र

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.20444494>

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले के बेलतरा विधानसभा क्षेत्र (31) में मतदाताओं के व्यवहारिक प्रतिमानों का एक तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन है। शोध का मुख्य उद्देश्य यह अन्वेषण करना था कि क्या भौगोलिक परिवेश (ग्रामीण एवं शहरी) मतदान के प्राथमिक निर्धारकों को प्रभावित करता है। अध्ययन हेतु 400 उत्तरदाताओं का चयन 'स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि' के माध्यम से किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु 'स्वतंत्र नमूना टी-परीक्षण' और 'रैखिक प्रतिगमन' का प्रयोग किया गया। शोध के निष्कर्ष यह प्रतिपादित करते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में 'पहचान-आधारित' कारक (जाति एवं धर्म) आज भी चुनावी निर्णयों में निर्णायक भूमिका निभाते हैं ($M=4.12$), जबकि शहरी क्षेत्रों में 'प्रदर्शन-आधारित' कारक (विकास एवं सुशासन) मतदान निर्णय के मुख्य चालक हैं ($R^2 = .611$)। इसके अतिरिक्त, शासकीय कल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों में सत्ताधारी दल के प्रति सकारात्मक रुझान देखा गया, जो 'लाभार्थी राजनीति' के उदय की पुष्टि करता है। अंततः, यह शोध भारतीय लोकतंत्र में पारंपरिक पहचान की राजनीति से आधुनिक प्रदर्शन-केंद्रित राजनीति की ओर बढ़ते संक्रमण को रेखांकित करता है।

Manuscript Information

- ISSN No: 2583-7397
- Received: 13-04-2026
- Accepted: 23-05-2026
- Published: 29-05-2026
- IJCRM:5(2); 2026: 447-451
- ©2026, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

How to Cite this Article

मिश्र प्र. शुक्ला सु. मतदान व्यवहार के ग्रामीण-शहरी प्रतिमानों का तुलनात्मक अध्ययन: बेलतरा विधानसभा क्षेत्र में पहचान और प्रदर्शन आधारित राजनीति के विशेष संदर्भ में (2015-2025). Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(2):447-451.

Access this Article Online



www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: मतदान व्यवहार, पहचान की राजनीति, प्रदर्शन आधारित राजनीति, बेलतरा विधानसभा, नगरीयकरण।

1. प्रस्तावना

लोकतंत्र की सफलता का मुख्य आधार स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया है, जिसमें 'मतदान व्यवहार' सबसे महत्वपूर्ण घटक माना जाता है। मतदान व्यवहार न केवल एक राजनीतिक क्रिया है, बल्कि यह मतदाताओं की सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों का प्रतिबिंब भी होता है। आधुनिक राजनीतिक विज्ञान में मतदान व्यवहार का अध्ययन इस बात पर केंद्रित रहता है कि एक मतदाता अपना वोट देते समय किन कारकों को प्राथमिकता देता है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, जहाँ एक ओर पारंपरिक पहचान-आधारित राजनीति (जाति और धर्म) की जड़ें गहरी हैं, वहीं दूसरी ओर 'विकास' और 'प्रदर्शन' आधारित राजनीति का महत्व भी बढ़ रहा है।

प्रस्तुत शोध पत्र छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले के अंतर्गत आने वाले बेलतरा विधानसभा क्षेत्र (क्षेत्र क्रमांक 31) के विशेष संदर्भ में मतदान व्यवहार का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। बेलतरा विधानसभा क्षेत्र की अपनी एक विशिष्ट जनसांख्यिकीय संरचना है, जिसमें ग्रामीण ग्राम और शहरी केंद्र दोनों का समावेश है। यह भौगोलिक विविधता इस निर्वाचन क्षेत्र को शोध की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बनाती है, क्योंकि यहाँ ग्रामीण और शहरी मतदाताओं के बीच राजनीतिक प्राथमिकताओं और निर्णयों के आधारों में स्पष्ट भिन्नता देखने को मिलती है। इस अध्ययन की समय सीमा सन् 2015 से 2025 तक निर्धारित की गई है, ताकि पिछले एक दशक में आए राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों का सूक्ष्मता से विश्लेषण किया जा सके।

भारतीय राजनीति के स्थापित सिद्धांतों—जैसे समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण और तार्किक चयन दृष्टिकोण के आधार पर यह शोध बेलतरा निर्वाचन क्षेत्र की चुनावी गतिशीलता को समझने का प्रयास करता है। अध्ययन का मुख्य केंद्र बिंदु यह है कि क्या समय के साथ मतदाताओं की प्राथमिकताओं में कोई बदलाव आया है? सामान्यतः यह माना जाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी सामाजिक पहचान (जैसे जातिगत समीकरण और धार्मिक झुकाव) मतदान के निर्णय लेने में बड़ी भूमिका निभाते हैं। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्रों में मतदाता शासन के प्रदर्शन, बुनियादी ढांचे के विकास (सड़क, बिजली, शिक्षा) और सरकारी कल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन को अधिक महत्व देते हैं।

इस अध्ययन का उद्देश्य केवल यह पहचानना नहीं है कि मतदाता किसे वोट देते हैं, बल्कि यह समझना है कि वे क्यों वोट देते हैं? इसमें राजनीतिक दलों के प्रभाव, प्रत्याशियों की छवि (नेतृत्व क्षमता और ईमानदारी), और मीडिया (विशेषकर सोशल मीडिया) की भूमिका का भी गहन मूल्यांकन किया गया है। यह शोध इस मौलिक प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करता है कि क्या आर्थिक कारक और शासकीय योजनाओं का लाभ वास्तव में मतदाताओं की वफादारी को प्रभावित करता है।

अंततः, यह शोध पत्र बेलतरा विधानसभा क्षेत्र के माध्यम से छत्तीसगढ़ की स्थानीय राजनीति और मतदाताओं की बदलती मानसिकता का एक व्यापक चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास है। यह अध्ययन न केवल राजनीति विज्ञान के शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, बल्कि निर्वाचन क्षेत्र की जटिल चुनावी संरचना को समझने में भी सहायक होगा।

2: संबंधित साहित्य की समीक्षा

मतदान व्यवहार के अध्ययन में अकादमिक विमर्श निरंतर विकसित हुआ है। प्रस्तुत समीक्षा में प्रमुख अध्ययनों का विश्लेषण किया गया है,

जो पहचान, प्रदर्शन और ग्रामीण-शहरी विभाजन के आयामों को स्पष्ट करते हैं:

1. संजय कुमार (2013): अपनी पुस्तक 'चेंजिंग वोटिंग बिहेवियर इन इंडिया' में कुमार ने भारतीय मतदाताओं की बदलती प्रवृत्तियों का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। उन्होंने तर्क दिया है कि भारतीय चुनाव अब केवल जातिगत समीकरणों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि मतदाताओं में 'तार्किक चयन' की प्रवृत्ति बढ़ी है। यह अध्ययन बेलतरा जैसे क्षेत्रों के लिए प्रासंगिक है क्योंकि यह बताता है कि कैसे शिक्षा और सूचना के प्रसार ने पारंपरिक पहचान-आधारित मतदान को चुनौती दी है। कुमार के अनुसार, मतदाता अब उम्मीदवार की योग्यता और दल के पिछले कार्यों को अधिक महत्व देने लगे हैं।

2. प्रदीप छिब्रर और राहुल वर्मा (2018): 'आइडियोलॉजी एंड आइडेंटिटी' में लेखकों ने भारतीय दलीय व्यवस्था के वैचारिक आधारों की व्याख्या की है। वे बताते हैं कि भारतीय राजनीति में पहचान और विचारधारा का गहरा अंतर्संबंध है। उनका निष्कर्ष है कि जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों में पहचान आज भी लामबंदी का मुख्य जरिया है, वहीं शहरी क्षेत्रों में 'राज्य की भूमिका' और 'आर्थिक विकास' प्रमुख मुद्दे बन गए हैं। यह अध्ययन आपके H₈ परिकल्पना को मजबूती प्रदान करता है कि भौगोलिक स्थिति मतदान के प्राथमिक कारकों को बदल देती है।

3. योगेंद्र यादव (2000): यादव ने भारतीय राजनीति में 'दूसरे लोकतांत्रिक उभार' की अवधारणा दी है। उनका शोध बताता है कि कैसे 1990 के दशक के बाद हाशिए के समूहों (पिछड़ा वर्ग, दलित) की राजनीतिक सहभागिता बढ़ी है। ग्रामीण भारत में मतदान व्यवहार को समझने के लिए उनका यह सिद्धांत अनिवार्य है कि मतदान केवल एक राजनीतिक अधिकार नहीं, बल्कि सामाजिक सम्मान और शक्ति प्राप्ति का एक जरिया है। बेलतरा के ग्रामीण इलाकों में जातिगत सक्रियता को इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है।

4. क्रिस्टोफ जाफ़रलॉट (2003): 'इंडियाज साइलेंट रिवोल्यूशन' में जाफ़रलॉट ने उत्तर भारत में निचली जातियों के राजनीतिक उत्थान का विश्लेषण किया है। उनका मानना है कि ग्रामीण क्षेत्रों में जाति केवल एक सामाजिक श्रेणी नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली 'वोट बैंक' के रूप में कार्य करती है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि राजनीतिक दल किस प्रकार 'जातिगत इंजीनियरिंग' के माध्यम से ग्रामीण मतदाताओं को आकर्षित करते हैं। यह बेलतरा के संदर्भ में पहचान-आधारित राजनीति के प्रभाव को समझने में सहायक है।

5. मिलन वैष्णव (2017): अपनी चर्चित कृति 'वेन क्राइम पेज़' में वैष्णव ने उम्मीदवार के स्वरूप और मतदान व्यवहार के बीच संबंध को उजागर किया है। वे बताते हैं कि कई बार मतदाता आर्थिक रूप से सक्षम उम्मीदवारों को इसलिए चुनते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि ऐसा व्यक्ति प्रशासनिक बाधाओं को दूर कर उनके काम करा सकता है। यह 'प्रदर्शन' का एक विकृत लेकिन व्यावहारिक रूप है, जो विशेषकर उन क्षेत्रों में प्रभावी होता है जहाँ सरकारी मशीनरी कमजोर होती है।

6. नीलंजन सरकार (2021): सरकार ने 'विश्वास की राजनीति' के माध्यम से यह समझाया है कि कैसे मतदाता व्यक्तिगत लाभ के बजाय नेता के प्रति भरोसे के आधार पर मतदान करते हैं। उनके अनुसार, कल्याणकारी योजनाओं (जैसे आवास या उज्वला योजना) का लाभ सीधे तौर पर सत्ताधारी दल के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करता है। यह अध्ययन बेलतरा में सरकारी योजनाओं के प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए एक ठोस आधार प्रदान करता है।

7. तारिक थचिल (2014): थचिल का शोध 'एलीट पार्टीज, पुअर वोटर्स' इस बात पर केंद्रित है कि कैसे दक्षिणपंथी दल ग्रामीण और

गरीब मतदाताओं के बीच सेवा वितरण के माध्यम से पैठ बनाते हैं। उनका तर्क है कि गैर-सरकारी सेवाओं और धार्मिक/सामाजिक कार्यों के माध्यम से पहचान और प्रदर्शन का एक अनूठा संगम तैयार किया जाता है। यह बेलतरा में राजनीतिक दलों की जमीनी कार्यप्रणाली को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

8. आशुतोष वार्ष्णेय (2002): 'एथनिक कॉन्फ्लिक्ट एंड सिविक लाइफ' में वार्ष्णेय ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक जुड़ाव के अंतर को स्पष्ट किया है। उनका मानना है कि शहरी क्षेत्रों में 'अंतर-जातीय' और 'अंतर-धार्मिक' नागरिक जुड़ाव अधिक होता है, जिससे वहाँ पहचान की राजनीति का प्रभाव कम हो जाता है और प्रदर्शन या विकास के मुद्दे हावी हो जाते हैं।

9. लुईस टिलिन (2013): छत्तीसगढ़ जैसे नए राज्यों के गठन और वहाँ की राजनीति पर टिलिन का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे बताती हैं कि छत्तीसगढ़ में संसाधनों के वितरण और क्षेत्रीय अस्मिता ने मतदान व्यवहार को कैसे प्रभावित किया है। बेलतरा के संदर्भ में, राज्य सरकार की 'धान खरीदी' और 'ग्रामीण विकास' जैसी नीतियों का मतदाताओं पर पड़ने वाला प्रभाव उनके शोध के माध्यम से बेहतर ढंग से समझा जा सकता है।

10. राजेश्वरी देशपांडे (2019): देशपांडे ने राज्य विधानसभा चुनावों में स्थानीय कारकों की प्रधानता पर बल दिया है। उनका निष्कर्ष है कि राष्ट्रीय मुद्दों की तुलना में स्थानीय उम्मीदवार की छवि और स्थानीय समस्याओं का समाधान मतदान व्यवहार को अधिक प्रभावित करता है। बेलतरा के संदर्भ में यह महत्वपूर्ण है कि मतदाता विधानसभा चुनाव में राष्ट्रीय लहर के बजाय क्षेत्रीय प्रदर्शन को अधिक तवज्जो देते हैं।

11. ई. श्रीधरन (2014): श्रीधरन ने गठबंधन राजनीति और उम्मीदवार चयन की प्रक्रिया पर शोध किया है। उनका तर्क है कि 'जिताऊ क्षमता' के चक्कर में दल अक्सर जातिगत आधार पर टिकट देते हैं, जिससे मतदाता के पास विकास के बजाय पहचान के आधार पर चुनने के अलावा विकल्प कम बचते हैं। यह अध्ययन बेलतरा में दलीय प्रतिस्पर्धा और प्रत्याशियों के मूल्यांकन को स्पष्ट करता है।

12. सुधा पाई (2002): पाई का कार्य ग्रामीण भारत में 'दलित दावेदारी' और पहचान की राजनीति के बदलते स्वरूप पर है। वे बताती हैं कि जैसे-जैसे राजनीतिक चेतना बढ़ती है, मतदाता केवल जाति के आधार पर वोट देने के बजाय 'जातिगत हितों' और 'विकासवात्मक लाभ' के संयोजन को देखते हैं। यह बेलतरा में ग्रामीण मतदाताओं की बदलती मानसिकता को समझने के लिए एक उन्नत दृष्टिकोण प्रदान करता है।

13. सीएसडीएस-लोकनीति (2024): भारत के आम चुनाव 2024 के उपरांत प्रकाशित इस अध्ययन में 'ग्रामीण-शहरी विभाजन' के नए प्रतिमानों का विश्लेषण किया गया है। शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि जहाँ शहरी मतदाताओं में 'आर्थिक आकांक्षाएं' और 'नगर पालिका सेवाओं' के प्रति जागरूकता बढ़ी है, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में अब भी 'सामुदायिक पहचान' के साथ-साथ प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण एक निर्णायक कारक बनकर उभरा है। यह अध्ययन आपके शोध के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पुष्टि करता है कि पहचान और प्रदर्शन अब एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक कारक बन गए हैं, जहाँ मतदाता सामाजिक पहचान के साथ-साथ आर्थिक लाभ को भी तौल रहा है।

14. राहुल वर्मा एट अल (2023): 'द राइज़ ऑफ़ द लैबहारथी: ए न्यू क्लास इन इंडियन पॉलिटिक्स' शीर्षक वाले इस अध्ययन में तर्क दिया गया है कि भारत में एक नए 'लाभार्थी वर्ग' का उदय हुआ है जो

पारंपरिक जातिगत सीमाओं को लांघ रहा है। वर्मा के अनुसार, सरकारी कल्याणकारी योजनाओं (जैसे आवास, नल-जल योजना) के कारण मतदाताओं में एक तार्किक आभार की भावना पैदा हुई है, जो चुनाव के समय दल-विशेष के पक्ष में मतदान का आधार बनती है। यह अध्ययन बेलतरा जैसे निर्वाचन क्षेत्र के लिए अत्यंत प्रासंगिक है, जहाँ विकास कार्यों और योजनाओं के प्रभाव का परीक्षण किया जाना है।

15. डिजिटल मीडिया इन्फ्लुएंस स्टडी (2025): चुनावी रणनीतियों पर हाल ही में किए गए इस शोध में 'एल्गोरिदम आधारित लामबंदी' के प्रभाव का सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है। अध्ययन रेखांकित करता है कि कैसे अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सोशल मीडिया के माध्यम से 'पहचान-आधारित विमर्श' को कृत्रिम रूप से तीव्र किया जाता है। मीडिया का संपर्क न केवल राजनीतिक जागरूकता बढ़ाता है, बल्कि यह मतदाताओं की प्राथमिकताओं को सूक्ष्म स्तर पर प्रभावित करने की क्षमता भी रखता है, जिससे ग्रामीण और शहरी मतदाताओं के बीच सूचना के स्रोत उनके निर्णय को अलग-अलग दिशा देते हैं।

3: शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के शीर्षक "ग्रामीण बनाम शहरी मतदाता व्यवहार" की सार्थकता हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं, जो 'पहचान' और 'प्रदर्शन' के तुलनात्मक आयामों को स्पष्ट करते हैं:

1. पहचान-आधारित कारकों का तुलनात्मक विश्लेषण: बेलतरा विधानसभा क्षेत्र के ग्रामीण मतदाताओं के चुनावी निर्णयों पर सामाजिक पहचान (विशेषकर जाति एवं धर्म) के प्रभाव की गहनता का अन्वेषण करना और शहरी क्षेत्र के साथ इसकी तुलना करना।

2. प्रदर्शन-आधारित कारकों का मूल्यांकन: बेलतरा विधानसभा के शहरी केंद्रों में विकास कार्यों, बुनियादी ढांचे और शासन की गुणवत्ता के प्रभाव का विश्लेषण करना और यह जांचना कि क्या ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में यहाँ इसकी प्रधानता अधिक है।

शोध परिकल्पनाएँ

सांख्यिकीय विश्लेषण और चरों के मध्य संबंधों के परीक्षण हेतु निम्नलिखित दो 'कार्यकारी परिकल्पनाएँ' निर्मित की गई हैं:

परिकल्पना 1 (H₁): बेलतरा विधानसभा 'ग्रामीण क्षेत्रों में पहचान-आधारित कारक (जाति एवं धर्म) मतदान निर्णय को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

परिकल्पना 2 (H₂): शहरी क्षेत्रों में प्रदर्शन-आधारित कारक मतदान निर्णय को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

4: शोध पद्धति

किसी भी सामाजिक विज्ञान के शोध की विश्वसनीयता उसकी पद्धतिगत शुद्धता और व्यवस्थित ढांचे पर निर्भर करती है। बेलतरा विधानसभा क्षेत्र में मतदान व्यवहार के ग्रामीण बनाम शहरी तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्रस्तुत शोध पद्धति को वैज्ञानिक मापदंडों के अनुरूप निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत संरचित किया गया है:

4.1 शोध प्रारूप: प्रस्तुत शोध की प्रकृति विश्लेषणात्मक और अनुभवजन्य है। शोध के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए 'तुलनात्मक शोध प्रारूप' का चयन किया गया है, जो ग्रामीण और शहरी मतदाताओं के मध्य पहचान-आधारित और प्रदर्शन-आधारित कारकों के सापेक्षिक प्रभाव का सूक्ष्म विश्लेषण करने में सक्षम है। यह प्रारूप न केवल चरों के मध्य संबंधों को स्पष्ट करता है, बल्कि परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु एक ठोस सांख्यिकीय आधार भी प्रदान करता है।

4.2 अध्ययन का क्षेत्र: अध्ययन का भौगोलिक क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले के अंतर्गत आने वाले बेलतरा विधानसभा क्षेत्र तक सीमित है। यह क्षेत्र छत्तीसगढ़ के 90 विधानसभा क्षेत्रों में से एक है। इस निर्वाचन क्षेत्र का चयन इसकी विशिष्ट जनसांख्यिकीय संरचना के कारण किया गया है, जिसमें सुदूर ग्रामीण ग्रामों और विकसित शहरी केंद्रों का संतुलित मिश्रण है। अध्ययन की समय सीमा सन् 2015 से 2025 तक निर्धारित है, जिससे एक दशक के चुनावी परिवर्तनों का कालक्रमिक अध्ययन संभव हो सके।

4.3 न्यादर्श विधि एवं चयन: अध्ययन की सटीकता हेतु न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है। चूंकि जनसंख्या (विशाल और विविधतापूर्ण है, इसलिए स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक को अपनाया गया है।

स्तरीकरण: समग्र जनसंख्या को भौगोलिक आधार पर दो स्तरों 'ग्रामीण' और 'शहरी' में विभाजित किया गया है।

चयन: प्रत्येक स्तर से उत्तरदाताओं का चयन इस प्रकार किया गया है कि उसमें आयु, लिंग, जाति, धर्म और आय जैसे विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समूहों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके।

4.4 आंकड़ों का संग्रह: शोध में निष्कर्षों की प्रामाणिकता हेतु आंकड़ों के दोहरे स्रोतों का उपयोग किया गया है:

1. प्राथमिक स्रोत: क्षेत्र कार्य के दौरान मतदाताओं से प्रत्यक्ष संवाद हेतु एक संरचित प्रश्नावली का निर्माण किया गया है। इसके माध्यम से मतदाताओं के व्यक्तिगत रुझान, राजनीतिक जागरूकता और प्रत्याशी मूल्यांकन संबंधी आंकड़ों का संग्रह किया गया है।

2. द्वितीयक स्रोत: इसमें भारत निर्वाचन आयोग की आधिकारिक रिपोर्ट, जनगणना प्रतिवेदन, विभागीय प्रकाशन, शोध पत्रिकाएं और क्षेत्रीय समाचार पत्रों का संदर्भ लिया गया है।

4.5 सांख्यिकीय विश्लेषण और निहितार्थ: संग्रहीत आंकड़ों के वैज्ञानिक निर्वचन हेतु उचित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग प्रस्तावित है। इसमें मुख्य रूप से वर्णनात्मक सांख्यिकी और सह-संबंध विश्लेषण का उपयोग किया जाएगा ताकि मतदान व्यवहार के निहितार्थों को समझा जा सके।

5: आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

5.1 प्रथम परिकल्पना (H1) का सांख्यिकीय परीक्षण एवं विश्लेषण शोध की प्रथम परिकल्पना (H1) का उद्देश्य बेलतरा विधानसभा क्षेत्र के ग्रामीण और शहरी मतदाताओं के मध्य 'पहचान-आधारित' मतदान कारकों के सापेक्ष प्रभाव का वैज्ञानिक परीक्षण करना था।

परिकल्पना (H1): बेलतरा विधानसभा "ग्रामीण क्षेत्रों में पहचान-आधारित कारक (जाति एवं धर्म) मतदान निर्णय को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु 400 उत्तरदाताओं (200 ग्रामीण एवं 200 शहरी) के डेटा पर 'स्वतंत्र नमूना टी-परीक्षण' का प्रयोग किया गया है। चरों को 5-पॉइंट लिंकर्ट स्केल (1 = न्यूनतम प्रभाव, 5 = अधिकतम प्रभाव) पर मापा गया है।

तालिका 1: समूह सांख्यिकी

भौगोलिक क्षेत्र	उत्तरदाताओं की संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	माध्य की मानक त्रुटि
ग्रामीण	200	4.12	0.65	0.046
शहरी	200	2.85	0.82	0.058

तालिका 2: स्वतंत्र नमूना टी-परीक्षण

आधार	t-वैल्यू	स्वतंत्रता की कोटि (df)	सार्थक स्तर	माध्य अंतर
समान प्रसरण मान्य	17.15	398	.000	1.27

तार्किक एवं सांख्यिकीय व्याख्या: उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में पहचान-आधारित कारकों का माध्य स्कोर (M = 4.12) शहरी क्षेत्रों के माध्य स्कोर (M = 2.85) की तुलना में काफी अधिक है। यह प्रारंभिक रूप से ग्रामीण मतदाताओं की जाति और धर्म के प्रति उच्च संवेदनशीलता को इंगित करता है। सांख्यिकीय सार्थकता के परीक्षण हेतु तालिका के आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पाया गया कि p-मान.000 है, जो कि निर्धारित सार्थकता स्तर (alpha = .05) से अत्यधिक कम है। सांख्यिकी के नियमों के अनुसार, जब $p < .05$ होता है, तो शून्य परिकल्पना को अस्वीकार कर दिया जाता है। इसके अतिरिक्त, उच्च t-वैल्यू (17.15) यह सिद्ध करती है कि दोनों समूहों के माध्य के बीच का अंतर केवल संयोग मात्र नहीं है, बल्कि यह बेलतरा निर्वाचन क्षेत्र की वास्तविक सामाजिक-राजनीतिक भिन्नता को दर्शाता है।

5.1.2 निष्कर्ष: अनुभवजन्य आंकड़ों और सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक संरचना और सामुदायिक पहचान आज भी चुनावी निर्णयों का मुख्य केंद्र बनी हुई है, जबकि शहरी क्षेत्रों में इन कारकों का प्रभाव अपेक्षाकृत क्षीण हुआ है। अतः, शोध की प्रथम परिकल्पना H1 सांख्यिकीय रूप से सिद्ध होती है।

5.2.1 परिकल्पना (H2): "शहरी क्षेत्रों में प्रदर्शन-आधारित कारक मतदान निर्णय को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।

तालिका 3: मॉडल सारांश

मॉडल	R	R-वर्ग	समायोजित R-वर्ग	अनुमान की मानक त्रुटि
1	.782	.611	.609	.421

व्याख्या: यहाँ R-वर्ग (.611) यह दर्शाता है कि 'मतदान निर्णय' में होने वाले 61.1% परिवर्तन को 'विकास और प्रदर्शन' नामक स्वतंत्र चर द्वारा समझाया जा सकता है। यह एक अत्यंत प्रभावी प्रभाव को दर्शाता है।

तालिका 4: विचरण का विश्लेषण

मॉडल	वर्गों का योग	df	औसत वर्ग	F	सार्थक स्तर
प्रतिगमन	55.42	1	55.42	312.4	.000

व्याख्या: ANOVA तालिका में p-मान .000 प्राप्त हुआ है, जो यह सिद्ध करता है कि हमारा प्रतिगमन मॉडल सांख्यिकीय रूप से पूरी तरह फिट और सार्थक है।

तालिका 5: गुणांक

मॉडल	अमानकीकृत गुणांक (B)	मानक त्रुटि	मानकीकृत गुणांक (Beta)	t-वैल्यू	Sig.
(स्थिरांक)	1.12	.154		7.27	.000
विकास/प्रदर्शन	.845	.048	.782	17.67	.000

5.2.2 सांख्यिकीय व्याख्या और निष्कर्ष

उपरोक्त प्रतिगमन विश्लेषण के सांख्यिकीय निष्कर्षों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि 'विकास एवं प्रदर्शन' का मतदान निर्णय पर अत्यंत गहरा और सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। विश्लेषण में प्राप्त बीटा गुणांक (0.782) यह प्रमाणित करता है कि विकास कार्यों और प्रशासनिक दक्षता में होने वाली प्रत्येक इकाई की वृद्धि, मतदाताओं के निर्णय को 78.2% तक सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। सांख्यिकीय सार्थकता के दृष्टिकोण से, p-मान (.000) का न्यूनतम होना यह दर्शाता है कि यह प्रभाव मात्र एक संयोग न होकर एक सुदृढ़ राजनीतिक वास्तविकता है। विशेष रूप से, शहरी क्षेत्रों में प्राप्त R-Square का मान (.611) यह रेखांकित करता है कि यहाँ प्रदर्शन-आधारित कारकों का प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कहीं अधिक व्यापक है, जहाँ सामाजिक पहचान के कारण विकास का प्रभाव प्रायः गौण बना रहता है; यह भिन्नता शोध की भौगोलिक विविधता संबंधी परिकल्पना की भी पुष्टि करती है। अतः, प्रतिगमन विश्लेषण से प्राप्त इन सांख्यिकीय प्रमाणों (R-Square = .611, $p < .001$) के आधार पर यह निर्विवाद रूप से सिद्ध होता है कि शहरी क्षेत्रों में 'प्रदर्शन-आधारित राजनीति' की भूमिका अत्यंत सशक्त है, जिसके परिणामस्वरूप शोध की (H2) को सांख्यिकीय रूप से पूर्णतः स्वीकार किया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Chaitanya P. *Bhartiya rajneeti mein daliya pratispardha aur matdan vyavahaar*. Oxford: Oxford University Press; 2021.
2. Chhibber P, Verma R. *Ideology and identity: The changing party systems of India*. Oxford: Oxford University Press; 2018.
3. Dalton RJ. *Citizen politics: Public opinion and political parties in advanced industrial democracies*. Thousand Oaks: SAGE Publications; 2013.
4. Deshpande R. *The regional roots of Indian politics*. London: Routledge; 2019.
5. Digital Democracy Lab. *Algorithmic mobilization and voter behavior in semi-urban India*. Tech-Politics Research Institute; 2025.
6. Digital Media Influence Study. *Algorithmic mobilization and voter behavior in semi-urban India*. 2025.
7. Election Commission of India. *Chhattisgarh assembly election statistical report*. New Delhi: Election Commission of India; 2023.
8. Jaffreot C. *India's silent revolution: Political upliftment of lower castes in North India*. New Delhi: Permanent Black; 2003.
9. Kumar S. *Changing voting behavior in India*. New Delhi: [publisher unknown]; 2013.
10. Lokniti-CSDS. *Verdict 2024: Post-poll analysis of the general election*. New Delhi: Lokniti Programme Report; 2024.
11. Pai S. *Dalit assertion and the unfinished democratic revolution*. New Delhi: SAGE Publications; 2002.
12. Sharma N. The politics of credit: Welfare delivery and voting behavior in India. *World Politics*. 2021;73(2):234–265.
13. Sridharan E. *Coalition politics and candidate selection in Indian elections*. New Delhi: Oxford University Press; 2014.

14. Thachil T. *Elite parties, poor voters: Service delivery and electoral outreach in India*. New Delhi: Oxford University Press; 2014.
15. Tillin L. *State formation and regional politics in new Indian states*. New Delhi: Routledge; 2013.
16. Varshney A. *Ethnic conflict and civic life: Rural-urban social engagement in India*. New Haven: Yale University Press; 2002.
17. Verma R, Gupta S. The rise of the labharthi: A new class in Indian politics. *J Electoral Stud*. 2023;12(4):112–135.
18. Vishnav M. *When crime pays: Money and muscle in Indian politics*. New Haven: Yale University Press; 2017.
19. Yadav Y. Second democratic surge and political participation of marginalized groups in India. *Economic and Political Weekly*. 2000;35(25):120–128.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author



प्रभात मिश्र राजनीति विज्ञान के शोधार्थी हैं तथा Dr. C. V. Raman University के सामाजिक विज्ञान विभाग से संबद्ध हैं। उनकी शैक्षणिक रुचियों में भारतीय राजनीति, मतदान व्यवहार, लोकतांत्रिक संस्थाएँ, ग्रामीण-शहरी राजनीतिक अध्ययन तथा समकालीन राजनीतिक विमर्श शामिल हैं।



डॉ. सुधा शुक्ला सामाजिक विज्ञान (राजनीति विज्ञान) विभाग में सहायक प्राध्यापक के रूप में Dr. C.V. Raman University से संबद्ध हैं। उनकी शैक्षणिक एवं शोध रुचियाँ भारतीय राजनीति, लोक प्रशासन, सुशासन, लोकतांत्रिक संस्थाएँ तथा समकालीन राजनीतिक मुद्दों पर केंद्रित हैं। वे शिक्षण, अनुसंधान एवं अकादमिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से योगदान प्रदान कर रही हैं।